IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दीनदयाल और स्वदेशी

*डॉ. अनिल कुमार

Abstract

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अपने दर्शन एकात्म मानववाद में बहुत आर्थिक विचार प्रस्तुत किये है, इन्हीं आर्थिक विचारों में से एक प्रमुख विचार है स्वदेशी का। दीनदयाल जी देश के आर्थिक विकास और आत्मनिर्भरता के लिए स्वदेशी को बहुत महत्वपूर्ण मानते है। उनके अनुसार स्वदेशी से रोजगार बढ़ता है, उत्पादन बढ़ता है, राष्ट्रीय आय बढ़ती है और देश का आर्थिक विकास होता है। स्वदेशी का अर्थ केवल देश के वस्तुओं या देश मे निर्मित वस्तुओं का उपयोग करना ही नही है अपितु देश के संस्कृति, परंपराओं और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना भी है।

वर्तमान में भारत सरकार भी स्वदेशी को बढ़ावा दे रही है। मेक इन इंडिया जैसे योजनाओं के माध्यम से सरकारें देश की वस्तुओं या देश मे निर्मित वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहित कर रही है।

स्वदेशी के विचार को अपनाकर देश, अपना आर्थिक विकास भी करेगा और आत्मनिर्भर भी बनेगा।

Key words- एकात्म मानववाद, स्वदेशी, आर्थिक विकास, आत्मनिर्भर, मेक इन इंडिया, वोकल फॉर लोकल, संस्कृति, परम्परा, भारतीय अर्थव्यवस्था।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का विचार दर्शन

'एकात्म मानववाद' के नाम से जाना जाता है।

यह दर्शन मानव को एकात्म अथवा समग्र रूप में देखता है और उनके शाश्वत सुख और कल्याण की बात करता है।

दीनदयाल जी का मानना था कि भारत और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए न पूंजीवाद सही है और न ही समाजवाद। हमारे देश के लिए एकात्म मानववाद की विचारधारा ही उपयुक्त है। यह विचारधारा कोई नयी विचारधारा नही है बल्कि हमारी सनातनी अर्थव्यवस्था की जो विशेषताएं थी, उसी का युगानुकूल रूप है। इस दर्शन का केंद्र बिंदु ही मानव है और मानव का सर्वांगीण विकास।

दीनदयाल जी के प्रमुख आर्थिक विचार-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अपने विचार दर्शन 'एकात्म मानववाद' के अंतर्गत विभिन्न आर्थिक मुद्दों पर अपने आर्थिक विचार दिए।

दीनदयाल जी मुख्य रूप से कृषि विकास, ग्रामीण विकास, अंत्योदय, विकेंद्रीकरण और स्वदेशी पर अपने आर्थिक विचार दिए है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है।

पंडित दीनदयाल जी का स्वदेशी पर विचार-

दीनदयाल जी ने अपने जीवन में स्वदेशी विचारधारा को बहुत महत्व दिया और इसे भारतीय समाज व अर्थव्यवस्था के विकास का आधार माना।

दीनदयाल जी का मानना था कि स्वदेशी व स्वदेशी विचारधारा ही भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर और समृद्ध बना सकती है।

दीनदयाल जी के अनुसार, स्वदेशी का अर्थ केवल स्थानीय उत्पादों का उपयोग करना ही नहीं, बल्कि अपने देश की संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों को बढ़ावा देना भी है।

स्वदेशी विचारधारा के अंतर्गत दीनदयाल जी का मानना था कि हमें विदेशी उत्पादों पर निर्भरता कम करनी चाहिए और स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए।

स्वदेशी से देश में बड़े उद्योग हो या छोटे, लघु एवं कुटीर उद्योग हो, सभी का विकास होगा।

स्वदेशी के द्वारा छोटे, लघु और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देकर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाये जा सकते है।

स्वदेशी उनके दर्शन का एक महत्वपूर्ण विचारधारा थी, जो भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर और मजबूत बनाने पर केंद्रित था।

स्वदेशी आंदोलन में दीनदयाल जी का योगदान-

दीनदयाल जी ने स्वदेशी आंदोलन को जन आंदोलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

दीनदयाल जी देश के विभिन्न भागों में जाकर स्वदेशी विचारधारा को राजनीतिक मंच दिया। उनके विचारों ने न केवल आर्थिक नीतियों को प्रभावित किया, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी बदलाव लाने का काम किया।

दीनदयाल जी देश में 'स्वदेशी जागरूकता अभियान' के तहत लोगों को स्थानीय उत्पादों के उपयोग के लिए प्रेरित करने का कार्य किए।

दीनदयाल जी के विचारधारा में स्वदेशी का महत्व-

दीनदयाल जी का मानना था कि स्वदेशी भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। दीनदयाल जी के अनुसार, स्वदेशी का अर्थ है देशी उत्पादों और संसाधनों का उपयोग करके देश को आत्मनिर्भर बनाना। दीनदयाल जी विदेशी उत्पादों और तकनीक पर अधिक निर्भरता को भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक मानते थे।

दीनदयाल जी का मानना था कि स्वदेशी से न केवल आर्थिक विकास होता है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और उसके पहचान को भी मजबूत बनाता है। दीनदयाल जी के अनुसार स्वदेशी से देश के लोगों को अपने पैरों पर खड़ा होने और आत्मसम्मान के साथ जीने का अवसर मिलता है।

स्वदेशी और सरकार

स्वदेशी का अर्थ है- देश में निर्मित और देश के वस्तुओं का उपयोग या उपभोग करना।

देश के वस्तुओं का उपयोग करने से देश के उद्योगों का विकास होगा, लोगों को रोजगार मिलेगा, उत्पादन बढ़ेगा, राष्ट्रीय आय बढ़ेगा और देश का आर्थिक विकास होगा। सबसे बड़ी बात है कि स्वदेशी से देश आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनेगा।

दीनदयाल जी की स्वदेशी विचारधारा ने भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला है। उनके विचारों ने भाजपा और वर्तमान सरकार को प्रेरित किया है।

वर्तमान में भारत सरकार भी स्वदेशी को बढ़ावा दे रही है। भारत सरकार 'मेक इन इंडिया', 'वोकल फोर लोकल' व 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों के माध्यम से स्वदेशी को बढ़ावा देने का ही प्रयास किया है। सरकारों का यह प्रयास केवल आर्थिक विकास को तेज ही नही करती हैं, बल्कि देश को आत्मनिर्भर भी बनाता हैं।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि दीनदयाल जी की स्वदेशी विचारधारा ने भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता और आर्थिक विकास के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है।

स्वदेशी का विचार आज भी प्रासंगिक हैं और देश की सरकारें स्वदेशी को बढ़ावा भी दे रही है।

स्वदेशी का विचार भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में सक्षम हैं।

संदर्भ-

1. उपाध्याय, दीनदयाल (1958). भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

2. उपाध्याय, दीनदयाल (1972). राष्ट्रचिंतन. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

3. उपाध्याय, दीनदयाल (1979). राष्ट्रजीवन की दिशा. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन.

4. उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ कार्यालय.

5. उपाध्याय, दीनदयाल (1991). एकात्म मानव दर्शन (दीनदयाल उपाध्याय, माधव सदाशिव गोलवलकर, दत्तोपंत ठेंगड़ी, तृतीय संस्करण). नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

6. ठेंगड़ी, दत्तोपंत (1991). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति दर्शन खंड- 1: तत्व जिज्ञासा. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

7. कुलकर्णी, शरद अनन्त (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन खंड-4: एकात्म अर्थनीति. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

8. पाठक, विनोद चंद्र (2009). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन. नई दिल्ली: प्रकाशक- आर. डी. पाण्डेय, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस.

9. गुप्त, बजरंग लाल (2014). दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म अर्थ चिंतन. मीडिया-विमर्श.

10. www.makeinindia.com

11. www.pmindia.gov.in

12. www.drishtiias.com

13. दैनिक समाचार पत्र।